2008 (4) 7

स्नातक तृतीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा
~~[struck out]~~ पंचम पत्र
प्रो० हरे कृष्ण झा हेड हिंदी विभाग,
जे०एन० कॉलेज, मधुबनी

प्रश्न- चन्द्रगुप्त नाटक के आधार पर सुवासिनी का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर- सुवासिनी मगध के अतिप्रिय अमात्य शकटार की कन्या है। वह सुन्दरियों की रानी है और कला मर्मज्ञ भी। वह बौद्ध मत की अनुयायिनी है। सुवासिनी सर्वप्रथम मगध सम्राट के विलास कानन की रानी के रूप में दिखाई पड़ती है। किशोरावस्था में चाणक्य के प्रति आकृष्ट हुई थी, परन्तु अब राक्षस की अनुरक्ता है। यों तो नंद भी उसे अपनी भोग्या बनाना चाहता है परन्तु वह उसका विरोध करती है। "मैं नन्द की विलास लीला का क्षुद्र उपकरण बनकर नहीं रहना चाहती।" वह अपने को राक्षस की धरोहर रखती है।

सुवासिनी संगीतज्ञ और कलाविद् है। अतएव सभी लोगों के लिए आकर्षण की वस्तु बनी हुई है। वह अपना हृदय राक्षस को उत्सर्ग कर चुकी है। राक्षस के प्रति उसकी अनुरक्ति दृढ़ है। इसका स्पष्ट संकेत उस समय मिलता है जब नन्द कहता है कि राक्षस उसका प्रणयी होकर पृथ्वी पर नहीं जी सकता और सुवासिनी स्पष्ट शब्दों में कहती है कि वह

अपने प्रणयी को खोजने के लिए स्वर्ण तक आने को
है। राक्षस के प्रति उसका प्रेम अगाध है।
उसके प्रणय-स्थल पर चाणक्य की स्मृति में एक व्यवधान उपस्थित कर दिया। चाणक्य की ओर उसका हृदय आकृष्ट होता है, क्योंकि वह सुवासिनी से बाल्यकाल से ही परिचित है पर चाणक्य समझ जाता है कि "सुवासिनी का प्रणय स्त्री और पुरुष के रूप में केवल राक्षस से अंकुरित हुआ।" और उसके शैशव का वह सब केवल हृदय की स्निग्धता थी। अतएव चाणक्य सुवासिनी को राक्षस के साथ परिणय करने की अनुमति देता है।

स्थिति रूप में वह गणिका है। उसका नारीत्व अपहृत नहीं हुआ है। पिता के बन्दी हो जाने पर ही उसने ऐसा रूप धारण किया। अन्यथा उसका हृदय पावन एवं पवित्र है। जैसे ही उसके पिता कारागार से बाहर आते हैं, वैसे ही वह आदर्श आर्य बालिका की तरह कहती ~~है~~ है— पिता ने जिनके लिए मेरा

चाहिये। मेरी निस्कलंकता नितांत वांछनीय हो।
सकती है, मुझे इस मलिनता के कीचड़ से कमल के
समान हाथों से ले लिया है।' वह शहारन को
अपने रूप और गुण का सच्चा ग्राहक समझती
है। नंद द्वारा पहुंचाई हुई बाधा एक क्षण और
एकरसरसता में दोनों 'सामाजिक नियम के बंधन
से बंध गये होते।' अब पिता मुक्त होकर
तब सुवासिनी कहती है - 'अब पिताजी की अनुमति
आवश्यक हो गयी है।' वह अपने पिता को मानसिक
कष्ट नहीं देना चाहती है। इसलिए वह कहती है —
"मैं तुम्हारा प्रणय अस्वीकार नहीं करती किंतु अब
इसका प्रस्ताव पिताजी से करो।" पर चाणक्य की
अनुमति से दोनों का परिणय निश्चित हो जाता है।
सुवासिनी कूटी कार्य भी अच्छा कर सकती है। इसके
साथ उसने कार्नेलिया के सामुख प्रेम की सुन्दर व्याख्या
की है। जिसमें नारी हृदय स्पष्टतर खुल पड़ा है।
वस्तुतः सुवासिनी में भाव विदग्धता के साथ साथ
वाक् चातुरी एवं कार्य पटुता भी है।

2006

प्रश्न → चन्द्रगुप्त नाटक के आधार पर अलका का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर → अलका गांधार नरेश की पुत्री और आम्भीक की बहन है। वह राष्ट्र प्रेमिका साहसी, व्यवहार कुशल और चतुर है। [उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व को देखकर हम उसे 'जोन ऑफ आर्क' कह सकते हैं] उसका प्रवेश नाटक के प्रथम दृश्य में ही होता है। तक्षशिला के गुरुकुल में ही वह सिंहरण, चन्द्रगुप्त और चाणक्य की बातें सुनकर प्रभावित होती है। इन लोगों की बातों में स्वदेश सेवा की भावना विद्यमान है। इसी से अलका के व्यक्तित्व में भी स्वदेशानुराग की भावना प्रस्फुटित हुई है। वह अपने पिता और भाई की अभि-संधि से पूर्णतया परिचित है। वे विदेशियों से मिलकर भारत की परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ देने की आकांक्षा रखते हैं। इसे रोकने के लिए वह व्याकुल हो जाती है। वह भारत की दुर्दशा का अनुमान भी नहीं करना चाहती

वह अपने परिवार के कार्यों के विरोध में खड़ी
हो जाती है। उसका भाई हो निकला है इसलिए
सिंहरण को उत्साहित करती हुई प्रण करती है —
जिस देश में ऐसे वीर युवक हों, उसका पतन असंभव
है। मालववीर, तुम्हारे मनोबल में स्वतंत्रता है और
तुम्हारी इन भुजाओं में आर्यावर्त के रक्षण की
शक्ति है, तुम्हें सुरक्षित रहना ही चाहिए। मैं भी
आर्यावर्त की बालिका हूं। तुमसे अनुरोध करती हूं
कि तुम शीघ्र गान्धार छोड़ दो। मैं आंभिक को
शक्ति भर पतन से रोकूंगी। परन्तु उसके लिए
ना मानने पर तुम्हारी आवश्यकता होगी।

अलका का भाई यवनों की सहायता
करने के लिए उद्भाण्ड में सिंधु पर पुल तैयार कर
रहा है। आंभिक मानचित्र सिंहरण को दे देता है।
जब यवन उससे मानचित्र लेने का प्रस्ताव उपस्थित
करते हैं तब उसकी निर्भीकता, वीरता, स्वदेशानु
रागिता और चातुर्य का परिचय मिलता है।
इन्हीं गुणों के कारण उसने यवनों के कुचक्र को
रोक वह सिंहरण की सहायता से कार्यों को

सघनीभूत करती है। वह सिंहरण को मानचित्र
देकर अपने उत्तरदायित्व से छुटकारा पा जाती है।
अलका राष्ट्र की रक्षा के लिए
अपने प्राण उत्सर्ग करने को तत्पर है। वह राष्ट्र
की सेवा विविध परिस्थितियों में करती रहती
है। वह अपने जीवन का अभीष्ट अपने पिता
के सम्मुख भी प्रकट करती है।

"अगर वह कारागार की चहारदीवारी
में बन्द न की जाती तो गांधार देश में विद्रोह
की ज्वाला भड़का देती।" वस्तुतः उसके हृदय
में स्वदेश के प्रति असीम श्रद्धा और भक्ति है।
अलका के चरित्र में व्यवहार कुशलता भी है।
वह परिस्थिति को देखकर अपना कार्य करती
है। वह सिल्यूकस से कहती है मेरा देश
है, मेरे पहाड़ हैं, मेरी नदियाँ हैं और
मेरे जंगल हैं। इस भूमि के एक-एक
परमाणु मेरे हैं, और मेरे शरीर का एक-एक
~~क्षुद्र~~ अंश उन्हीं परमाणुओं के बने हैं।
इस प्रकार कहती हुई वह अपना दामन

सौन्दर्य से कूटकर निकल आती है। उसके देशानुराग और स्वाभिमान की अभिव्यक्ति दाण्ड्यायन के आश्रम में भी होती है। दाण्ड्यायन के पूछने पर वह स्वाभिमान भरा उत्तर देती है— "गुरुदेव, यवनों के दास स्वाधीनता खोकर उनके दान से जीने की शक्ति मुझमें नहीं।" इसी देश प्रेम के कारण वह सेना में नर-नारी के रूप में सफलतापूर्वक कार्यों का सम्पादन करती है। रणक्षेत्र में वह सिंहरण की सहायता करती है जिसके लिए वह बंदिनी बनाई जाती है। वह सिंहरण के वीरता पूर्ण कार्यों पर मुग्ध है। उसका हृदय उससे प्रणय की याचना करने लग जाता है। जीवन के प्रत्येक कार्य में वह सिंहरण को सहायता प्रदान करती है। वह पर्वतेश्वर के ~~अ~~ राजमहल में बंदिनी है फिर भी प्रेम का स्वांग रचाकर सिंहरण को मुक्त कराती है यही उसकी बुद्धि की विलक्षणता है।

अलका वीर बालिका है, मालवदुर्ग पर जब सिकन्दर आक्रमण करता है तब वह मालव दुर्ग की रक्षा का भार अपने कोमल कन्धे पर ले

लेती है और वीर सैनिक की भाँति तलवार लेती है और वीर सैनिक की भाँति कई सैनिकों को मार रहती है। यों तो उसने कई सैनिकों को मार गिराया था परंतु सिकन्दर पर भी उसका प्रहार रहा। वह तनिक भी युद्ध से घबराती नहीं है। सेवा का भाव उसमें कूट-कूटकर भरा हुआ है।

जब दूसरी बार सेल्युकस का आक्रमण होता है तो उस अवसर पर वह तक्षशिला की जनता के बीच एक राष्ट्रीय गीत गाकर उसके आन्तरिक तारों को झंकृत कर देती है। इससे देश-वासियों के हृदय पर उत्साह की भावना भर उठती है। वे सब संगठन कार्य में लगा जाते हैं इस पर आम्भीक भी सचेत हो उठता है। और अपने पूर्व कर्मों पर क्षोभ होता है। इसलिए वह आवेश में कहता है— "बहन तू छोटी है पर मेरी श्रद्धा का आधार है। मैं भूल करता था बहन तक्षशिला के लिए अलका की आंभीक की आवश्यकता नहीं।

मैं देश-द्रोही हूं नीच हूं। तूने तो गांधार

का मुख उज्ज्वल किया है। राजस्थान के योद्धा नु ही है।" चाणक्य ने भी अलका की देशानुरागिता की प्रशंसा की है — "मेरी लक्ष्मी अलका ने आर्य गौरव के लिए क्या-क्या कष्ट उठाए।"

अलका में अनेक गुणों का संतुलित समन्वय है। वह वीर है, साहसी है, निष्कपट प्रेमिका है, बुद्धिमति है स्वदेशानुरागिनी है। उसका प्रत्येक कार्य राष्ट्रीयता से सम्बन्धित है। वह आम्भीक जैसे देश द्रोही को राष्ट्र प्रेम बनाकर संदेश देती हुई कहती है — "राज्य किसी का नहीं सुशासन का है। जन्मभूमि के भक्तों में आज जागरण देखते नहीं, प्राच्य में सूर्योदय हुआ है। स्वयं सम्राट चन्द्रगुप्त तक इस महान, आर्य साम्राज्य के सेवक हैं। स्वतंत्रता के युद्ध में सैनिक और सेनापति का भेद नहीं। जिसकी खड्ग प्रभा में विजय का आलोक चमकेगा। वही वरेण्य है उसी की पूजा होगी। भाई, तक्षशिला तेरी और हमारी भी नहीं। तक्षशिला आर्यावर्त का एक भूभाग है। वह आर्यावर्त की होकर रहे इसके लिए मर मिटो।

फिर इसके कणों में तुम्हारा ही नाम अंकित
होगा। मेरी चिता स्वर्ग में इन्द्र से प्रतिस्पर्धा
करेगी। वहाँ अप्सराएं जयमाला कर स्तुति
होगी। सूर्यमंडल मार्ग देगा। और उज्ज्वल
आलोक मंडित होकर गांधार का राजकुल
अमर हो जाएगा।

चाणक्य ने अलका और सिंहरण
को परस्पर वैवाहिक बंधन में बांध दिया।।
इस प्रकार उन्होंने दोनों के प्रेम की सार्थकता।
प्रमाणित की। सभी दृश्यों से अलका का
चरित्र अत्यन्त निखर उठा है।